शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १८ : अंक १७ : नई दिल्ली : २९ जुलाई से ४ अगस्त २०१२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण ५१ तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी आदि श्रमणी ९२ जसोल में सानंद चातुर्मासिक प्रवास कर रहे हैं। धर्म प्रभावना उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। तपस्याओं का क्रम निरंतर जारी है। दर्शन-उपासना हेतु प्रतिदिन लोग बड़ी संख्या में जसोल पहुंच रहे हैं। मौसम पूरी तरह से अनुकूल है। केवल मध्याह्न में गर्मी का असर दिखाई देता है। शेष समय और रात्रि में शीत हवा के साथ कभी-कभी हल्की फुहार भी पड़ जाती है।

समझो पापों को-४

आचार्य महाश्रमण

आर्हत वाङ्मय के दसवेआलियं सूत्र में कहा गया है--

अबंभचरियं घोरं पमायं दुरहिट्ठियं।
नायरंति मुणी लोए, भेयाययणवज्जिणो।।६/१५।।

अब्रहाचर्य लोक में घोर प्रमादजनक और दुर्बल व्यक्तियों द्वारा आसेवित है। चरित्र भंग के स्थान से बचने वाले मुनि उसका आसेवन नहीं करते।

आचार्य हेमचन्द्र ने 'अभिधान चिंतामणि' में त्रिवर्ग के बारे में बताया है--**त्रिवर्गो धर्मकामार्थाः**। त्रिवर्ग में तीन चीजें हैं--धर्म, काम और अर्थ। सामान्य इन्सान के जीवन में अर्थ भी आवश्यक होता है और काम भी चलता है। गृहस्थ जीवन रूपी रथ इन दो पहियों से चलता है--अर्थ और काम। गार्हस्थ्य में अर्थ नहीं है तो बड़ी कठिनाई हो जाती है। पैसा इस दुनिया का, यों कहें कि भौतिक जगत का ईश्वर है। पैसे के बिना आदमी क्या कर सकता है। भोजन पैसे से मिलता है, कपड़ा पैसे से मिलता है, वाहन पैसे से मिलता है। जीवन की अनेक चीजें पैसे पर आधारित हैं। गार्हस्थ्य में पैसा न हो तो शर्म की बात हो जाती है।

गरीबी गौरव गमाना, अमीरी अभिशाप है।
मांग खाना, मान खोना, मानसिक संताप है।।

साधु हाथ फैलाए, यह तो गौरव की बात है। पर गृहस्थ हाथ फैलाए, यह स्वाभिमान और गौरव के अनुकूल बात नहीं होती। गृहस्थ जीवन में काम भी चलता है। इसकी संपूर्ति के लिए विवाह का प्रावधान है। भारतीय संस्कृति में विवाह को 'पाणिग्रहण' कहा गया है। पाणिग्रहण, यानी एक दूसरे का हाथ थामना। विवाह के पीछे तीन उद्देश्य होते हैं--

पहला उद्देश्य--एक ऐसे जीवन साथी को प्राप्त करना, जो सुख-दुःख में साथ रह सके।

दूसरा उद्देश्य--वंश परम्परा को आगे चलाना। मानव सभ्यता को आगे बढ़ाने के लिए सम्बन्ध की अपेक्षा होती है। विवाह के द्वारा मानव सृष्टि की परम्परा को आगे बढ़ाने में मनुष्य अपना योगदान देता है।

तीसरा उद्देश्य--संयमित कामेच्छा की पूर्ति करना। कामेच्छा उच्छृंखल न हो जाए, नियंत्रित रूप में उसकी संपूर्ति हो।

भगवान् ऋषभ के समय अथवा उनसे पहले यौगलिक काल में भाई-बहन होते और वे ही आगे

जाकर पति-पत्नी के रूप में परिणत हो जाते। आज तो ऐसा संस्कार बना हुआ है कि कोई भाई बहन के प्रति ऐसा चिन्तन भी कर ले तो उसे गर्हणीय पाप माना जाता है। हर युग की, समय की अपनी सामाजिक या मानवीय व्यवस्थाएं होती हैं। उस समय यह व्यवस्था थी कि किसी दूसरे के साथ संबंध नहीं करना, अपने भाई और बहिन के साथ ही संबंध करना।

जैन वाङ्मय में गृहस्थ के लिए, श्रावक के लिए स्वदार-स्वपति संतोष व्रत की बात बताई गई है। यह काम पर धर्म का अंकुश है। अर्थ और काम पर धर्म का अंकुश, संयम का अंकुश रहना चाहिए। गृहस्थ जीवन में एक त्रिकोण है--अर्थ, काम और धर्म। इन तीनों में संतुलन होता है तो गार्हस्थ्य की गाड़ी सुचारु रूप से चलती है और अंसतुलन हो जाता है तो उस गाड़ी का पहिया जाम हो जाता है। ऐसा बताया गया कि आदमी को अर्थ के पीछे इतना नहीं पड़ना चाहिए कि वह सम्यक् काम सेवन भी न कर सके और काम के प्रति भी इतना नहीं पड़ना चाहिए कि सम्यक् अर्थोपार्जन भी न कर सके। प्राचीन साहित्य में तो यहां तक सीख दी गई है--गृहस्थ को धर्म भी इतना नहीं करना चाहिए कि अर्थ और काम में बाधा पड़ जाए। कोई गृहस्थ यह कहे कि मैं तो दिनभर सामायिक करूंगा, तो यह उसके लिए उचित बात नहीं होगी। कोई युवक या परिवार का मुखिया, जिस पर परिवार के भरण-पोषण का दायित्व है, वह दिन भर सामायिक लेकर बैठा रहे तो घर का काम कैसे चलेगा? यह तो उत्तरदायित्व से भागने वाली बात होगी। इसलिए कहा गया कि धर्म भी इतना मत करो कि तुम्हारे पारिवारिक जीवन या गार्हस्थ्य जीवन में बाधा पैदा हो जाए। गृहस्थ जीवन में धर्म, काम और अर्थ--इन तीनों का संतुलन अपेक्षित माना गया है। संस्कृत साहित्य में कहा गया है--

कांताकांचनचक्रेषु, भ्राम्यति भुवनत्रयम्।
तासु तेषु विरक्तो यः, द्वितीयः परमेश्वरः।।

चतुर्थ चरण यह भी हो सकता है--**स साधुः सद्भिरुच्यते**। दुनिया में दो चक्र हैं--कांता और कांचन यानी स्त्री और पैसा। इनमें तीनों लोक भ्रांत हो रहे हैं, चक्कर काट रहे हैं। इनसे जो विरक्त हो जाता है, वह साधु कहलाता है अथवा यह कहें कि वह परमात्मा का दूसरा रूप होता है। एक साधु के लिए अपेक्षित है कि वह पूर्णतया शील की साधना करे। परन्तु जो गृहस्थ हैं, पूर्ण शील की साधना जिनके लिए संभव न हो, उनके लिए एक व्रत दिया गया--स्वदारसंतोष/स्वपति संतोष व्रत। संस्कृत साहित्य में कहा गया--**संतोषः त्रिषु कर्त्तव्यः, स्वदारे भोजने धने**। गृहस्थ को स्वदार में संतोष करना चाहिए, भोजन में संतोष करना चाहिए और धन में भी संतोष करना चाहिए। इसके लिए संयम का संकल्प आवश्यक है। अगर संयम का संकल्प नहीं होता है तो बड़ा कठिन है स्वदार संतोष व्रत धारण करना। कुछ ऐसे निमित्त मिल जाएं, जैसे--युवावस्था हो, रुचिकर भोजन और पेय सुलभ हो, खूब मान-प्रतिष्ठा हो और संबंधों/संपर्कों में खुलावट हो, यानी परस्पर मिलने-जुलने में कोई रोक-टोक न हो तो स्त्री या पुरुष के लिए कभी भी, कहीं भी विचलन, फिसलन हो सकती है। संस्कृत साहित्य में कहा गया है--

यौवनं धनसम्पत्तिः, प्रभुत्वमविवेकिता।
एकैकमप्यनर्थाय, किमु यत्र चतुष्टयम्।।

जवानी में संयम न हो तो आदमी गलत कार्यों में भी जा सकता है। धन-सम्पत्ति हो, सत्ता हाथ में हो और विवेक न हो तो आदमी मदान्ध हो सकता है। दूसरों की समस्या का समाधान करने वाला दूसरों को तकलीफ देने वाला बन सकता है यानी सत्ता भी अनर्थकारी बन सकती है। इन सबका राजा है--अविवेक। मेरा तो मानना है कि विवेक और संयम है तो यौवन भी अच्छा है, विवेक है तो पैसे से उपयोगी काम किए जा सकते हैं। लेकिन विवेक नहीं है तो फिर यौवन भी अनर्थकारी, धन भी अनर्थकारी

और सत्ता भी अनर्थकारी बन सकती है। इसलिए आदमी में विवेक रहना चाहिए। **'विवेगे धम्ममाहिए'** विवेक धर्म है।

एक वृद्ध पुरुष पुत्र सहित प्रव्रजित हुआ। गुरु और शिष्य के रूप में दोनों साथ में रहते थे। अवस्था प्राप्त गुरु तो बड़े संयमी, सहिष्णु, दयालु, कृपालु और अन्तर्मुखी थे, अपनी साधना में लीन रहते, किन्तु चेला जवान और उच्छृंखल था, विवेक भी कुछ कम था और संयम तो बहुत कम था। साधना में उसका मन नहीं लगता था। विवेक और संयम का अभाव व्यक्ति को सुविधावादी बना देता है। वह शिष्य सुविधावादी बन गया।

सुविधावाद और प्रमाद साधना की दृष्टि से त्याज्य हैं। सन् १९९१ में परम पूज्य गुरुदेव तुलसी सोजत रोड में विराजमान थे। मैंने उनके निर्देश से सिंवाची मालानी क्षेत्र की यात्रा की। यात्रा संपन्न कर सोजत में गुरुदेव के दर्शन किए। प्रवचन के दौरान गुरुदेव ने फरमाया--'आज मेरी एक चिन्ता दूर हुई है। मुझे चिन्ता थी कि मुनि मुदित को 'महाश्रमण' के पद पर नियुक्त तो कर दिया, पर यह स्वभाव से अन्तर्मुखी है, कुछ बोलता नहीं। दिन भर अपने में मस्त रहता है। लेकिन इस यात्रा में इसने मुझे निश्चिन्त बनाया है। यात्रा में भीड़ बराबर बनी रही और यह कार्य करता रहा। साथ-साथ इसे भीड़ में भी अकेले रहने का अभ्यास है, यह प्रसन्नता की बात है। मुनि मुदित एक यात्रा करके लौटा है। इस उपलक्ष्य में इसे मैं कुछ देना चाहता हूं। पर क्या दूं? महाश्रमण का पद तो इसे पहले ही दे दिया।' सारी सभा चित्रलिखित-सी गुरुदेव की ओर देख रही थी। गुरुदेव ने तत्कालीन युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ की ओर उन्मुख होकर कहा--'बोलो, महाप्रज्ञजी! इसे क्या दूं?' लोगों के मन में उत्सुकता बढ़ गई कि पता नहीं गुरुदेव आज महाश्रमण मुदित को क्या देने वाले हैं? फिर गुरुदेव ने फरमाया

इड्ढिं च सक्कारण पूयणं च,
चए ठियप्पा अणिहे जे स भिक्खू।

जो ऋद्धि, सत्कार और पूजा की स्पृहा को त्यागता है, जो स्थितात्मा है, जो अपनी शक्ति का गोपन नहीं करता, वह भिक्षु है।

गुरुदेव ने अपना कथन जारी रखा--'यह तो मैंने कुछ नहीं दिया। आज कुछ देना अवश्य है। आचार्य भिक्षु ने अपने प्रिय शिष्य भारीमालजी से कहा था--'यदि तुम्हारी कोई शिकायत आ जाए तो तुम्हें प्रायश्चित्त स्वरूप एक तेला करना होगा।' मैं तेले की बात तो नहीं करता, पर इतना अवश्य कहना चाहूंगा कि आज समाज में सुविधावाद अपने पांव पसारता जा रहा है। उसका प्रभाव साधु समाज पर भी आ रहा है। इस दृष्टि से मैं एक प्रयोग करना चाहता हूं--मुनि मुदित की सुविधावादी के रूप में शिकायत आए या मुझे अनुभूति हो जाए तो तीन दिन लगातार तीन-तीन घंटे खड़े रहकर इसे ध्यान या स्वाध्याय करना होगा।' इस तरह गुरुदेव तुलसी ने मानो मुझे एक मार्गदर्शन दिया था कि सुविधावाद में नहीं जाना है। जहां सुविधावाद, आरामतलबी, ऐशोआराम, भोग-विलास हैं, वहां विकास के आगे प्रश्नचिह्न लग जाता है और विकास में कुछ अवरोध पैदा हो सकता है।

मैं कहानी में बता रहा था कि गुरु का वह चेला सुविधावादी मनोवृत्ति का था। खाना-पीना, मौज करना ही उसने अपने जीवन का लक्ष्य बना रखा था। लेकिन वह चेला वृद्ध साधु को अतीव इष्ट था। एक दिन दुःख प्रकट करते हुए उसने कहा--'बिना जूते के चला नहीं जाता।' अनुकंपावश वृद्ध संत ने उसे जूतों की छूट दे दी। तब चेला बोला--'ऊपर का तला ठंड से फटता है।' वृद्ध ने मोजे करा दिए। वह कहने लगा--'धूप में सिर अत्यन्त जलने लगता है।' वृद्ध ने सिर ढकने के लिए वस्त्र की आज्ञा दे दी। चेले ने कहा--'भिक्षा के लिए नहीं घूमा जाता।' वृद्ध ने वहीं उसे भोजन ला कर देना शुरू किया। वह बोला--'भूमि पर नहीं सोया जाता।' वृद्ध ने बिछौने की आज्ञा दे दी। चेला बोला--'लोच करना नहीं

बनता।' वृद्ध ने क्षुर को काम में लेने की आज्ञा दे दी। चेले ने कहा--'बिना स्नान किए नहीं रहा जाता।' वृद्ध ने प्रासुक पानी से स्नान करने की आज्ञा दे दी। इस तरह वृद्ध साधु स्नेहवश सुविधाभोगी चेले की इच्छानुसार उसकी हर मांग पूरी करता गया। एक दिन चेले ने कहा--'मैं एकाकी जीवन से ऊब गया। अब बिना स्त्री के नहीं रह सकता।' वृद्ध संत ने यह जानकर कि यह शठ है और अयोग्य है, उसे अपने आश्रय से दूर कर दिया।

इच्छाओं के वशीभूत व्यक्ति इसी तरह बात-बात में शिथिल हो कायरता दिखा अपना विनाश कर लेता है। संयम न हो तो इन्द्रिय-निरोध की साधना में कठिनाई पैदा हो जाती है। समाचार पत्रों में आता है कि कुछ लड़कों ने किसी कन्या का अपहरण कर उसके साथ दुराचार किया, फिर उसे जान से मार दिया। संयम नहीं होता है, तब ऐसी स्थिति बनती है। भारतीय संस्कृति में स्वदार संतोष और स्वपति संतोष का एक सुन्दर मार्गदर्शन दिया गया है। यह धर्म की दृष्टि से तो अच्छा है ही, सुंदर सामाजिक व्यवस्था की दृष्टि से भी अच्छा है। विवाह करके आदमी जीवन भर के लिए एक दूसरे का साथ निभाने के लिए संकल्पित होता है। कुछ दिन साहचर्य निभता है और फिर तलाक की नौबत आ जाती है। जिसको जीवनसाथी और सहचर मान लिया, फिर जिन्दगी भर उसका साथ निभाना कर्तव्य हो जाता है। छोटी-मोटी बातों को लेकर असहिष्णु बनोगे तो कठिनाई की स्थिति पैदा हो सकती है। दाम्पत्य जीवन में सहिष्णुता की आवश्यकता होती है। उसके बिना संबंधों में दुराव और तनाव पैदा होता है। कई बार मेरे पास लोग आते हैं और कहते हैं कि हमारी शादी हुए पचीस वर्ष अथवा पचास वर्ष हो गए हैं। मैं उनसे पूछता हूं कि इस लंबी अवधि में आपका जीवन शांति में बीता या अशांति में? उनका सकारात्मक उत्तर सुनकर उनकी सराहना करने को मन करता है। लम्बे समय तक दो व्यक्ति यदि शांति के साथ रहे हैं तो मेरा मानना है कि यह भी एक प्रकार की साधना है। एक-दूसरे के प्रति विश्वास हो, एक-दूसरे को सहन करने की क्षमता हो और एक-दूसरे की अपेक्षाओं पर ध्यान दिया जाए तो शांति से जीवन जिया जा सकता है।

जैन वाङ्मय में एक सुन्दर पथदर्शन दिया गया कि गार्हस्थ्य में स्वदार/स्वपति संतोष व्रत हो तो वह अध्यात्म की साधना है और समाज व्यवस्था की दृष्टि से भी यह एक अच्छा उपक्रम है।

•

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण जसोल में

अन्तर्राष्ट्रीय न्यायाधीश पूज्य सन्निधि में

१८ जुलाई। आज प्रातः अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के न्यायाधीश श्री दलवीरसिंह भण्डारी ने परमपूज्य आचार्यवर के दर्शन किए। वार्तालाप के दौरान परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने उन्हें तेरापंथ के अवदानों आदि के विषय में अवगति देते हुए पावन पाथेय प्रदान किया। श्री भण्डारी ने आचार्यप्रवर को अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय की कार्यशैली से अवगत कराया। आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति जसोल द्वारा श्री भण्डारी को पूज्यवरों का साहित्य उपहृत किया गया।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में परमाराध्य आचार्यप्रवर ने हाजरी के लिए उपस्थित साधु-साध्वियों को संबोधित करते हुए अपने मंगल प्रवचन में कहा--'जो साधु संयम में रत रहता है, उसे देवों से भी विशिष्ट सुख प्राप्त होता है और जो संयम में रमण नहीं करता, वह दुःखी बन जाता है। साधु साधना का जीवन जीता है। साधना-पथ पर चलते-चलते कहीं कोई फिसलन की स्थिति भी आ सकती है। किन्तु ऐसी स्थिति में साधु का संकल्प और साधना बल मजबूत बना रहे। उसका लक्ष्य रहे कि मेरा साधुत्व अधिकाधिक उज्ज्वल रहे, साधुता की चद्दर पर कोई धब्बा न लगे। सबल दोषों का सेवन करनेवाला साधु अपनी

अमल धवल चद्दर को चितकबरी बना देता है। साधु जीवन के नैर्मल्य की विशिष्टता को प्राप्त करना साधु का लक्ष्य रहे। साधना की पवित्रता के लिए कषाय का प्रतनु होना आवश्यक है। वर्तमान में भरत क्षेत्र में कषाय का सर्वथा क्षीण होना संभव नहीं होता, किन्तु साधु उसे प्रतनु करने का प्रयास करता रहे।'

विनयभाव की प्रेरणा प्रदान करते हुए परमाराध्य आचार्यप्रवर ने कहा--'तेरापंथ धर्मसंघ में विनय की जो प्रशस्त परम्परा रही है, उसे जीवित रखने का प्रयास रहे। छोटे साधु-साध्वियां अपने से बड़ों का सम्मान करें। उनके द्वारा कुछ कहने पर बद्धांजलि सविनय उत्तर दें। गृहस्थ भी अपने से बड़ों का अपमान न करें। व्यवहार में शालीनता, मृदुता, शिष्टता का परिचय दें।'

पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने प्रवचन के उपरान्त हाजरी का वाचन किया। नवदीक्षित मुनि अनेकान्तकुमारजी, मुनि जागृतकुमारजी और मुनि विवेककुमारजी ने लेखपत्र का उच्चारण किया। पूज्यवर ने हाजरी में प्रथम बार लेखपत्र उच्चरित करने वाले तीनों मुनियों पर अनुग्रह करते हुए उन्हें प्रोत्साहनस्वरूप पांच-पांच कल्याणक बक्शीश किए। कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ। तेरापंथ कन्यामंडल जसोल द्वारा चौबीसी संगान के अन्तर्गत भगवान श्रेयांसनाथ की स्तवना की गई। श्री चन्द्रप्रकाश मेहता ने सपत्नीक शीलव्रत स्वीकार किया। आज बाड़मेर के जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री सुखपाल बुंदेव ने आचार्यवर के दर्शन कर पावन संबोध प्राप्त किया।

सीमित करें इच्छाओं को

१९ जुलाई। प्रातःकालीन कार्यक्रम के अन्तर्गत परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में पांचवें महाव्रत को व्याख्यायित करते हुए कहा--'साधु के लिए सर्व परिग्रह से विरत होकर साधना करने का विधान है। वह अर्थ का पूर्णतया परित्यागी होता है। किसी भी जमीन-जायदाद, भवन आदि का स्वामित्व साधु का नहीं होता। परम पद को पाने के लिए अकिंचनता की साधना आवश्यक होती है।

पूज्यप्रवर ने आगे कहा--'गृहस्थ के लिए अपरिग्रह की परिपूर्ण साधना कठिन होती है। यदि गृहस्थ के पास कौड़ी (अर्थ) नहीं है तो वह कौड़ी का कहलाता है और साधु के पास कौड़ी (अर्थ) है तो वह भी कौड़ी का बन जाता है। गार्हस्थ्य में अर्थ की अपेक्षा होती है, किन्तु व्यक्ति अर्थ को ही सब कुछ मानकर न चले। वह अर्थार्जन में नैतिकता और प्रामाणिकता को प्रमुखता दे। श्रावक के लिए इच्छा परिमाण व्रत निर्दिष्ट किया गया। बारह व्रतों को स्वीकार करने वाला श्रावक इस व्रत को अंगीकार करता है। मूर्च्छा को परिग्रह कहा गया है। अतः श्रावक पदार्थों का सीमाकरण और मूर्च्छा को प्रतनु बनाने का प्रयत्न करे। अपरिग्रह महाव्रत और इच्छा परिमाण व्रत की साधना श्रेयस्कर होती है।' पूज्यवर ने प्रवचन के पश्चात गुरुदेव तुलसी द्वारा विरचित 'डालिम चरित्र' आख्यान का वाचन किया।

कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरणादायी अभिभाषण हुआ। तेरापंथ कन्यामंडल जसोल ने चौबीसी के अंतर्गत भगवान वासुपूज्य स्तुति गीत का संगान किया। श्री बाबूलाल डोसी ने काव्य को प्रस्तुति दी। पूज्यप्रवर की सन्निधि में १८-२० जुलाई तक मुम्बई तेरापंथ महिला मंडल की लगभग २२५ बहनों ने उपासना का लाभ लिया। पैंतालीस वर्ष से अधिक अवस्था वाली इन महिलाओं के लिए चित्तसमाधि शिविर की समायोजना हुई। आज के कार्यक्रम में मंडल की अध्यक्ष श्रीमती निर्मला चिंडालिया ने अपने विचार व्यक्त किए तथा बहनों ने गीत का सामूहिक संगान किया।

देह से विदेह की ओर प्रस्थान है तपस्या

२० जुलाई। आज प्रातःकालीन कार्यक्रम में तेरापंथ कन्यामंडल जसोल ने चौबीसी के भगवान विमलनाथ स्तवन का संगान किया। मुनि रजनीशकुमारजी की बारह की तपस्या के संदर्भ में उनकी संसारपक्षीया भगिनी साध्वी धवलप्रभाजी एवं साध्वी मार्दवयशाजी ने मंगलभावना व्यक्त करते हुए गीत का संगान

किया। मुनिश्री के संसारपक्षीय पारिवारिकजनों ने भी तप की अनुमोदना करते हुए गीत का संगान किया। मुनि रजनीशकुमारजी ने अपने भावोद्‌गार व्यक्त किए।

मंत्री मुनिश्री ने अपने प्रेरणादायी वक्तव्य में कहा--'कर्मों को तोड़ने के लिए तपस्या एक प्रभावी उपक्रम है। मुनि रजनीशकुमारजी ने पूज्यवर से आज बारह की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। ये तप के साथ आचार्यवर की सेवा का भी दायित्व निभा रहे हैं। सेवा को प्राथमिकता देना हमारा धर्म है। ये अपनी तपस्या और सेवा भावना को वृद्धिंगत रखते हुए गुरुकुलवास का लाभ उठाते रहें।'

परम पावन आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'तपस्या के द्वारा आत्मा उज्ज्वलता को प्राप्त होती है। अनादिकाल से हमारी आत्मा कर्म मल से आवृत है। उसे पूर्णतया मुक्त बनाने के लिए चारित्र की आराधना और तप की साधना--दोनों आवश्यक हैं। तप के बारह प्रकारों में प्रथम है--अनशन, अर्थात अनाहार की साधना। कई दिनों तक निराहार रहना सबके लिए आसान कार्य नहीं होता। कुछ व्यक्ति विशेष क्षयोपशम वाले होते हैं, जो तपस्या के साथ अपने दैनन्दिन कार्यों को भी यथावत बनाए रखते हैं। तप के लिए चतुर्मास और उसमें भी श्रावण-भाद्रपद मास अधिक उपयुक्त माना गया है। तपस्या में कायबल के साथ मनोबल भी बहुत जरूरी होता है। मनोबल के बिना लंबी तपस्या करना कठिन होता है। तपस्या में जप, स्वाध्याय, ध्यान, कायोत्सर्ग आदि का प्रयोग करने से वह अधिक बलवती बन जाती है। जैन शासन में तप का विशेष उपक्रम चलता है। तपस्वी मानों देह से विदेह की ओर गति करता है। कषाय मंदता की साधना के साथ की जाने वाली तपस्या अधिक श्रेयस्कर होती है।'

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने मुनि रजनीशकुमारजी की तपस्या के संदर्भ में कहा--'मुनि रजनीशकुमारजी कई तरह की तपस्या करते हैं। ये अनाहार की तपस्या में हमारी सेवा भी करते हैं और जानकारी मिली कि १५००-२००० गाथाओं का स्वाध्याय भी कर लेते हैं। परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी की भी इन्होंने कितनी सेवा की। ये रात्रि में उनके समीप सोने का दायित्व भी निभाया करते थे। गुरुदेव को उदक (पानी) पिलाने का जिम्मा भी इनका था। आचार्यों को उदक पिलाना बहुत बड़ा दायित्व होता है। इस कार्य में जागरूकता की अपेक्षा होती है। गुरुदेव के बाद अब ये हमारी उदक संबंधी सेवा कर रहे हैं। बड़ी जागरूकता से अपना दायित्व निभा रहे हैं। संतों की गोचरी व्यवस्था भी ये संभालते हैं। इस प्रकार अनेक कार्यों से ये जुड़े हुए हैं। हम इनके तप की अनुमोदना करते हैं और मंगलकामना करते हैं कि संघ में तपस्वी साधु-साध्वियां होते रहें।'

प्रवचन के उपरान्त पूज्य आचार्यवर ने 'डालिम चरित्र' आख्यान को सरस शैली में व्याख्यायित किया। कार्यक्रम में मुम्बई से समागत हितेशकुमार कुमठ ने अपनी सीडी 'चैतन्य रूपम' लोकार्पित करते हुए गीत का संगान किया। मुनि जिनेशकुमारजी ने पूज्य सन्निधि में श्रावक समाज से अधिकाधिक तप करने का आह्वान किया। आज पारमार्थिक शिक्षण संस्था में प्रवेश करने हेतु समुद्यत सुश्री इन्द्रा भंसाली (बालोतरा) के परिजनों की ओर से प्रमोद भंसाली ने काव्य स्वर में अपने मंगलभाव व्यक्त किए। श्रीडूंगरगढ़ निवासी कोलकाता प्रवासी श्री धर्मचन्दजी पुगलिया के स्वर्गवास के पश्चात् उनके परिजन आचार्यवर की सन्निधि में संबल प्राप्ति हेतु उपस्थित हुए। पूज्यप्रवर ने कार्यक्रम में उनके सुपुत्र श्री भीकमचन्द पुगलिया को अच्छा कार्यकर्ता बताते हुए परिजनों को पावन पाथेय प्रदान किया।

सरसंघचालक डा. मोहन भागवत आचार्यवर की पावन सन्निधि में

२१ जुलाई। आज प्रातः राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डा.मोहन भागवत परम श्रद्धेय आचार्यवर की मंगल सन्निधि में उपस्थित हुए। उन्होंने आते ही पूज्यवर को बद्धांजलि नतशिर वंदन किया और कुशलपृच्छा की। पूज्यवर और श्री भागवत के बीच कुछ समय वार्तालाप हुआ, तत्पश्चात आचार्यवर की सन्निधि में आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में डा.भागवत मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित

रहे। कार्यक्रम का विषय था 'राष्ट्र विकास में नैतिक मूल्यों की भूमिका।' कार्यक्रम के प्रारंभ में चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति, जसोल के संयोजक श्री गौतमचन्द सालेचा और अध्यक्ष श्री जसराज बुरड़ ने श्री भागवत के स्वागत में अपने उद्‌गार व्यक्त किए। श्री चन्द्रशेखर छाजेड़ ने श्री भागवत का परिचय प्रस्तुत किया।

मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'किसी भी राष्ट्र का विकास केवल भौतिक संसाधनों से नहीं होता। पदार्थ का उपयोग करने वाले यदि नैतिक हैं तो राष्ट्र का विकास संभव है। स्वतंत्रता के साथ भारत के विकास की नई परिकल्पना संजोई गई। उस समय आचार्य तुलसी ने कहा था कि यदि चरित्र का निर्माण होगा, तभी राष्ट्र का विकास होगा, अन्यथा राष्ट्र के विकास के जो सपने संजोए जा रहे हैं, उनका पूरा होना कठिन होगा। इसी को ध्यान में रखकर उन्होंने अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन किया और जन-जन में नैतिक चेतना विकसित करने का प्रयास किया। आचार्यश्री महाश्रमणजी भी अहिंसा यात्रा के माध्यम से जनता के चारित्रिक उत्थान का प्रयास कर रहे हैं। श्री भागवतजी चिंतनशील व्यक्ति हैं, एक बड़े संगठन का नेतृत्व कर रहे हैं। ऐसी आशा है कि दो शीर्षस्थ पुरुषों के सहचिंतन से जनता को बहुत कुछ प्राप्त होगा, निष्पत्तिपरक परिणाम सामने आएंगे।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'भारत ऋषिप्रधान देश है। यहां चारित्रिक मूल्यों को सदैव महत्त्व और प्रमुखता दी गई। नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था रखने वाले अपनी भूमिका के प्रति जागरूक रहें तो राष्ट्र का विकास और अधिक हो सकता है। भारत ने अहिंसा के बल पर स्वतंत्रता प्राप्त की, किन्तु ऐसा प्रतीत होता है आज देशवासी नैतिकता और अहिंसा के संस्कारों से कुछ दूर जा रहे हैं। नैतिक मूल्यों को लोकजीवन में प्रतिष्ठित करने के लिए शीर्ष पदों पर अवस्थित लोगों को स्वयं के जीवन में परिवर्तन लाना होगा। यदि ऐसा होता है तो जनता में भी परिवर्तन आना संभव है। अणुव्रत को अंगीकार कर उसे जीवन में आत्मसात किया जाए तो राष्ट्र का हर दृष्टि से उत्थान हो सकता है।'

आचार्यश्री को सुनने से होती है हमारी बैटरी चार्ज : श्री भागवत

सरसंघचालक डा. मोहन भागवत ने अपने अभिभाषण में कहा--'चरित्र के बिना राष्ट्र का विकास नहीं हो सकता, यह सर्वमान्य बात है, तर्कसिद्ध और अनुभवसिद्ध भी है। चरित्र की परिभाषा देश, काल और परिस्थिति पर निर्भर है। इसलिए हर कार्य में विवेक आवश्यक है और गंतव्य के प्रति निष्ठा भी अपेक्षित है। नैतिक मूल्यों का सर्वाधिक महत्त्व है। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह--इन मूल्यों को सभी मानते हैं और ये मूल्य हमारे आधार हैं। आज दुनिया को इनकी आवश्यकता है, किन्तु इसके लिए उसे भारत का उदाहरण चाहिए। यदि हमारा राष्ट्र इन मूल्यों के आधार पर गति करेगा तो निश्चित रूप से राष्ट्र का विकास तो होगा ही, संपूर्ण विश्व को इससे एक प्रेरणा मिल सकेगी।'

पूज्य आचार्यप्रवर के प्रति श्रद्धाप्रणति अर्पित करते हुए श्री भागवत ने कहा--'आचार्यश्री महाश्रमणजी के पास मेरा प्रतिवर्ष आने का मन है और अभी तक मैंने उसका पालन किया है। क्योंकि यह हमारी दिशा निर्धारित करनेवाला और नैतिक मूल्यों का बोध देने वाला स्थान है। यहां केवल भाषण ही नहीं सुनने को मिलता, जीवन की ऊर्जा भी प्राप्त होती है। एक बार आचार्यश्री के दर्शन से और उन्हें सुनने से हमारी बैटरी साल भर के लिए चार्ज हो जाती है। आप लोग भी ऐसी ही ऊर्जा यहां से प्राप्त करके जाएं और उसका विनियोग साल भर जनकल्याण के लिए करें।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'ज्ञानी व्यक्ति के ज्ञान का सार है कि वह किसी की हिंसा नहीं करता। चरित्र का महत्त्वपूर्ण बिन्दु है-अहिंसा। व्यक्ति के जीवन में नैतिक मूल्य और अहिंसा विद्यमान है तो उसमें चरित्र का विकास स्वतः हो जाता है। राष्ट्र के विकास को चार आयामों में विभक्त किया जा सकता है--भौतिक विकास, आर्थिक विकास, नैतिक विकास, आध्यात्मिक विकास।

राष्ट्र की उन्नति के लिए भौतिक और आर्थिक विकास की आवश्यकता को नकारा नहीं जा सकता। किन्तु यह विकास का आधा पक्ष है। समग्र विकास के लिए नैतिक और आध्यात्मिक विकास भी आवश्यक है। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने भारत के विभिन्न प्रान्तों की यात्राएं कीं तथा अणुव्रत आन्दोलन के माध्यम से राष्ट्र के नागरिकों में नैतिक मूल्यों को विकसित करने का प्रयास किया। परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी ने अपनी अहिंसा यात्रा के दौरान जन-जन में अहिंसा और नैतिक चेतना के जागरण का प्रयत्न किया।'

पूज्य आचार्यप्रवर ने पांच महाव्रतों के संदर्भ में डा. भागवत के कथन का उल्लेख करते हुए कहा--'इन पांच यमों को नैतिक मूल्यों के रूप में स्वीकार किया जा सकता है। यदि ये व्यक्ति के जीवन में आ जाएं तो राष्ट्र का नैतिक और आध्यात्मिक विकास स्वतः हो सकता है। भारत अपने आप में एक विशिष्ट देश है। यहां अध्यात्म का बहुत महत्त्व रहा है। यह एक ऐसा देश है, जहां विभिन्न सम्प्रदाय और जातियों के लोग रहते हैं। उनमें परस्पर सौहार्द और सौमनस्य का भाव रहना चाहिए। समाज में भ्रूणहत्या जैसा घिनौना कृत्य न हो, सभी नशामुक्त रहें। नशा नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठापना में बाधक तत्त्व है। इसलिए व्यक्ति उससे दूर रहे और ईमानदारी को जीवन में प्रमुख स्थान दे, यह अपेक्षित है।'

डा.भागवत के आगमन के प्रसंग में आचार्यवर ने कहा--'श्री मोहनजी भागवत जैसे मनीषी व्यक्ति का आगमन हुआ है, जो एक बड़े संगठन के मुखिया और संचालक हैं। मनीषी व्यक्तियों के विचारों में उच्चता होती है। उनकी मनीषा से जो विचार अभिव्यक्त होते हैं, वे श्रोतव्य होते हैं, मननीय होते हैं। उन्हें सुनने से सात्विक प्रेरणा प्राप्त हो सकती है।'

महाप्रज्ञ ने कहा-४३ का लोकार्पण

आचार्यवर के पावन प्रवचन के उपरान्त मुनि जयकुमारजी ने अपनी विचाराभिव्यक्ति के साथ आदर्श साहित्य संघ द्वारा प्रकाशित 'महाप्रज्ञ ने कहा' ग्रंथमाला का ४३वां पुष्प श्रीचरणों में उपहृत किया। आचार्यप्रवर ने इस प्रसंग में कहा--'परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के प्रवचनों का संकलन 'महाप्रज्ञ ने कहा' पुस्तकमाला के रूप में प्रस्तुत हो रहा है। प्रस्तुत पुस्तक इस श्रृंखला की ४३वीं कड़ी है। गुरुदेव महाप्रज्ञजी एक मनीषी और प्रज्ञावान महापुरुष थे। कितने-कितने लोगों ने उनकी वाणी से लाभान्वित होने का प्रयास किया। पुस्तक के संपादन में मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी और मुनि जयकुमारजी का श्रम लगा है। मुख्यनियोजिकाजी गुरुदेव महाप्रज्ञ के सान्निध्य में कार्य कर चुकी हैं। मुनि जयकुमारजी हमारे धर्मसंघ के प्रतिष्ठित मुनि हैं। प्रस्तुत पुस्तक पाठकों के लिए रुचिकर और ज्ञानवर्द्धक सिद्ध हो, शुभाशंसा।

कार्यक्रम के अंत में चातुर्मास व्यवस्था समिति के महामंत्री श्री शांतिलाल भंसाली ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि हिमांशुकुमारजी ने किया।

अपराह्न में लगभग तीन बजे श्री मोहन भागवत पुनः पूज्यसन्निधि में उपस्थित हुए। आचार्यप्रवर और श्री भागवत के बीच लगभग एक घंटे तक वार्तालाप का क्रम चला। प्रेक्षाध्यान, नवदंपति प्रशिक्षण, विदेशों में प्रेक्षाध्यान केन्द्र, शाखा, प्रचारक, रामजन्मभूमि प्रकरण, जम्मू कश्मीर में अलगाववाद और आतंकवाद, गंगा विशुद्धिकरण, राष्ट्र की ज्वलंत समस्याएं, गुरुदेव तुलसी जन्मशताब्दी वर्ष में १०० महाव्रती तथा अधिकाधिक अणुव्रती बनाने का संकल्प, जीवनविज्ञान, तेरापंथ की मर्यादाएं, आचार्यवर द्वारा आगामी वर्षों में की जाने वाली सुदूर प्रान्तों और विदेश की यात्राएं आदि विविध विषय दो शीर्ष महापुरुषों की चर्चा के विषय रहे। इस अवसर पर साधु-साध्वियों द्वारा प्रतिदिन उच्चारित किए जाने वाला 'लेखपत्र' पूज्यवर के निर्देश पर मुनि कुमारश्रमण ने डा. मोहनजी भागवत को सुनाया। श्री भागवतजी ने पूज्यवर से संघ के मुख्यालय नागपुर पधारने का अनुरोध भी किया।

आज से पूज्यवर की पावन सन्निधि में अ.भा.तेरापंथ युवक परिषद द्वारा द्विदिवसीय कार्यकर्ता प्रशिक्षण

कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। रात्रि में संभागियों को आचार्यवर का पावन पाथेय संप्राप्त हुआ। अ.भा. तेयुप के अध्यक्ष श्री संजय खटेड़ ने अ.भा.तेयुप की गतिविधियों की अवगति दी। मध्याह्न में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री मोहन भागवत का भी प्रेरक उद्‌बोधन हुआ। कार्यशाला में ५४ शाखा परिषदों के २७३ युवकों की संभागिता रही। तेयुप के प्रभारी मुनि दिनेशकुमारजी और सहप्रभारी मुनि योगेशकुमारजी से भी कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण प्राप्त हुआ।

सफलता के लिए आवश्यक है संकल्पबल व साहसबल

२२ जुलाई। वीतराग समवसरण में प्रातःकालीन कार्यक्रम राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जिला बालोतरा द्वारा आयोजित हुआ, जिसमें आसपास के क्षेत्रों के लगभग तीन हजार स्वयंसेवकों ने भाग लिया। गणवेश में सज्जित स्वयंसेवकों द्वारा ध्वज वंदन व प्रार्थना के पश्चात् संगायक प्रकाश माली द्वारा राष्ट्र जागरण भावना पर आधारित गीतों की सीडी का विमोचन सरसंघचालक श्री मोहन भागवत ने किया। जिला संघ चालक श्री सुरंगीलाल सालेचा ने स्वागत भाषण किया। श्री नेमीचन्द सुथार ने गीत प्रस्तुत किया।

सरसंघचालक श्री मोहन भागवत ने अपने वक्तव्य में कहा--'आचार्य महाश्रमणजी ने कार्यकर्ताओं के लिए जो सूत्र दिए हैं, उपदेश दिया है, उस पर प्रत्येक कार्यकर्ता को ध्यान देना है। सेवा कार्य में संलग्न कोई भी कार्यकर्ता, जो इन सूत्रों को सामने रखकर कार्य करता है, वह प्रवीण कार्यकर्ता होता है। कार्यकर्ता को अपना लक्ष्य सामने रखना चाहिए। हम एक स्वतंत्र राष्ट्र के नागरिक हैं, अपने राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति चाहते हैं। विविधता में एकता वाला तथा संपूर्ण विश्व को एक कुटुम्ब के रूप में देखने वाला एक मात्र देश भारतवर्ष ही है। जमीन, जल, जन, जंगल, जानवर आदि सभी के लिए यहां विकास के भरपूर अवसर हैं। हमारा देश सबकी उन्नति का कारक, सबके प्रति प्रेमभाव और किसी के प्रति वैर भाव न रखनेवाला एकमात्र देश है। हमारे देश में विभिन्न वर्ग और समुदायों की अलग-अलग उपासना पद्धतियां हैं। उसमें किसी की ओर से किसी भी प्रकार का कोई हस्तक्षेप नहीं है। सबको अपने में समाविष्ट कर लेना भारतीय संस्कृति की विशेषता है।'

श्री भागवत ने आगे कहा--'किसी भी संगठन में आत्मीयता आवश्यक है। सबको अपना मानें। कोई फिसल गया तो उसे संभालें, भूलवश दूसरा रास्ता ले लिया और पुनः सही रास्ते पर आ गया तो उसे अपनाएं, स्वीकारें। भगवान महावीर अहिंसा के प्रतिरूप थे। उनके जीवन में मूर्तिमान हुई अहिंसा सबके जीवन में आए। हम सब मिलकर धर्म, संस्कार, संस्कृति की रक्षा करें।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'व्यक्ति में संकल्पबल व साहस बल हो तो उसके लिए कोई कार्य दुष्कर नहीं होता। व्यक्ति कोई काम करने का सपना लेता है तो वह सपने तक ही सीमित न रहे। वह संकल्प में परिणत हो तो उसकी फलश्रुति प्रकट हो सकती है। उत्साह व साहस के अभाव में कार्य का प्रारंभ ही नहीं हो पाता। प्रारंभ हो भी गया तो कठिनाई या बाधा आने पर साहस के अभाव में उसे बीच में ही छोड़ देते हैं। उत्तम लोग वे होते हैं, जो दृढ़ संकल्प व साहस के साथ विघ्न-बाधाओं को चीरते हुए गंतव्य तक पहुंच जाते हैं। सफलता प्राप्त करने के लिए समर्पणभाव आवश्यक है। ध्येय के प्रति समर्पण हो, कार्य के प्रति निष्ठा हो, अन्य आकांक्षा गौण हो तो लक्ष्य की प्राप्ति हो सकती है।'

कार्यकर्ता को परिभाषित करते हुए आचार्यवर ने कहा--'जो कार्य करता है, वह कार्यकर्ता है। अपना काम तो लोग करते हैं। वस्तुतः परार्थ के लिए जो बड़े हित को सामने रखकर कार्य करता है, वह कार्यकर्ता कहलाता है।' आचार्यवर ने कार्यकर्ता की कसौटी व अर्हता के सात सूत्रों--सेवा, सहिष्णुता, विनम्रता, क्षमता व दक्षता का विकास, नशामुक्ति, नैतिकता व समर्पण का विशद विवेचन करते हुए कहा--'कार्यकर्ता

अहंकार से बचे। जो कार्यकर्ता बड़ों का सम्मान तथा वृद्धों की यथौचित्य सेवा करता है, उसके लिए कहा गया है कि उसकी आयु लंबी होती है, विद्या वृद्धिंगत होती है, उसकी शक्ति और यश का विस्तार होता है। एक-एक बूंद से घट भर जाता है। कार्यकर्ता एक-एक गुण को स्वयं में समाहित करें, संजोएं, जिससे उनका जीवन श्लाघनीय बने। वे अतीत में हुए महापुरुषों से प्रेरणा प्राप्त कर स्वयं को उपयोगिता के साथ गतिमान बनाए रखें।'

कार्यक्रम का संचालन आर.एस.एस.के जिला शारीरिक प्रमुख श्री शैतानसिंह ने किया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रान्त प्रचारक श्री दुर्गादास, संपर्क प्रमुख राजेन्द्रसिंह, सहसंपर्क प्रमुख श्री प्रकाशचन्द्र, प्रचारक प्रमुख श्री नंदलाल जोशी, सेवाभारती प्रमुख श्री मूलचन्द सोनी, जोधपुर संभाग प्रचारक श्री मुरलीधर, संघचालक श्री ललित शर्मा, प्रान्त कार्यवाह श्री जसवंत खत्री, विभाग प्रचारक श्री राजाराम आदि अनेक विशिष्ट पदाधिकारी कार्यक्रम में उपस्थित थे। पचपदरा निवासी श्री जवेरीलाल चोपड़ा की दो सुपुत्रियों--दिव्या व सोनू ने पूज्यवर से मंगलपाठ सुनकर पारमार्थिक शिक्षण संस्था में प्रवेश किया।

बड़प्पन है दो बात सुन लेना

२३ जुलाई। प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'व्यक्ति अपने आपको देखे। जो आत्मदर्शी होता है, वह अध्यात्म में गति करने लगता है। हर आदमी अपनी आंखों से बाहर देखता है। उसे दूसरों के बारे में सोचने में रस आता है। अपने भीतर देखने में जो जितना पटु होता है, स्वयं को सुधारने में वह उतना ही सक्षम बनता है।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'धर्म के दस प्रकारों में एक है--क्षमा। क्षमा वीरों का भूषण है। यह क्रोध का विलोम शब्द है। क्रोध उसे आता है, जिसमें सहिष्णुता का अभाव होता है। साधु का यह धर्म है कि वह क्षमा का आसेवन करे। पूज्य गुरुदेव तुलसी ने आन्तरिक व बाह्य, दोनों प्रकार के विरोध को झेला। उन्होंने परिस्थितियों को सहा। बात-बात में आवेश और गुस्सा व्यक्ति के पारिवारिक और सामाजिक जीवन को प्रभावित करता है। दूसरों के द्वारा उसे आदर नहीं मिलता। आवेश से बचना आध्यात्मिक दृष्टि से तो आवश्यक है ही, व्यावसायिक दृष्टि से भी लाभदायक है। समाज व संगठन के पदाधिकारियों के लिए यह आवश्यक है कि वे अपने व्यवहार को मृदु, शिष्ट व विनम्र बनाएं। अति क्रोध व्यक्ति के मानसिक संतुलन को तो प्रभावित करता ही है, शारीरिक दृष्टि से भी हानिकारक है।'

क्षमा को आत्मकल्याण का हेतु बताते हुए आचार्यवर ने कहा--'आत्मकल्याण के साथ-साथ क्षमा का व्यावहारिक महत्त्व भी है। दो की चार सुनाना कोई बड़प्पन नहीं है। बड़प्पन है दो बात सुन लेना। जैसे को तैसा, यह मध्यम कोटि का व्यवहार है। हमारे साथ कोई कितना ही बुरा व्यवहार करे, हम उसके साथ अच्छा व्यवहार करें, यह उत्कृष्टकोटि की साधना है।। गुस्सा भी एक प्रकार का नशा है। चिंतन, मनन व प्रयोग के द्वारा हम क्रोध पर नियंत्रण करना सीखें।' प्रवचन के अनन्तर 'डालिम चरित्र' का सरस वाचन हुआ। कार्यक्रम के प्रारंभ में कन्यामंडल ने धर्म जिन स्तवन का संगान किया। श्री सुरेश डोसी ने गीत प्रस्तुत किया। वाव पथक महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती कोकिलाबेन ने वाव में अक्षयतृतीया करने की प्रार्थना की।

मुनि धर्म है निर्लोभता की साधना

२४ जुलाई। प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'दस धर्मों में दूसरा धर्म है--मुक्ति। यह शब्द मोक्ष के अर्थ में प्रयुक्त होता है। त्यागना मुक्ति है। लोभ का विलोम शब्द भी मुक्ति है। लोभ एक मौलिक मनोवृत्ति है। बाह्य वस्तुओं के प्रति सहज ही एक आकर्षण

रहता है। लाभ के साथ लोभ के भाव वृद्धिंगत होते रहते हैं। निर्लोभता की साधना करना मुक्ति धर्म है। जीवन लोभ, आरोग्य लोभ, इन्द्रिय लोभ आदि अनेक प्रकार के लोभ ग्रंथों में वर्णित हैं। लंबा जीवन जीना बड़ी बात नहीं है, सार्थक एवं संयममय जीवन जीना महत्त्वपूर्ण है। ऐसा जीवन ही विशिष्ट व कार्यकारी होता है। संयमरहित लंबा जीवन जीने की आकांक्षा भी एक प्रकार का जीवन लोभ है। मुक्ति की साधना के लिए हम लोभ की चेतना से उपरत बनें। आकांक्षा को न्यून करने के लिए वैराग्य को पुष्ट बनाएं।' श्रावक समाज को प्रेरणा प्रदान करते हुए आचार्यवर ने कहा--'श्रावक-श्राविकाएं यह सोचें कि कर्तव्य का निर्वहन करते हुए मोह को कैसे प्रतनु करें और कैसे अनासक्त बनें। इसके लिए हमें मुक्ति की साधना में संलग्न रहना चाहिए।'

कार्यक्रम के प्रारंभ में मंत्री मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ। कन्यामंडल जसोल ने चौबीसी के अंतर्गत भगवान अनंत स्तवन का संगान किया। श्री अर्जुन सोलंकी (मुम्बई) ने गीत प्रस्तुत किया।

आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी समारोह : निर्धारित परियोजनाएं

तेरापंथ धर्मसंघ के नवमाधिशास्ता अणुव्रत प्रवर्तक युगप्रधान आचार्य तुलसी बीसवीं सदी के ज्योतिर्मय महापुरुष का नाम है। उस महान व्यक्तित्व द्वारा प्रदत्त अवदानों के लिए न केवल तेरापंथ और जैन शासन, अपितु संपूर्ण मानव जाति उनकी चिरऋणी रहेगी। वि.सं.१९७१, कार्तिक शुक्ला द्वितीया, तदनुसार २० अक्टूबर १९१४ को राजस्थान राज्य के नागोर जिले में स्थित लाडनूं में एक विलक्षण बालक का अवतरण इस वसुधा को धन्य बनाने वाला सिद्ध हुआ। लगभग सवा आठ दशक के अपने जीवनकाल में वे अपने कर्तृत्व वैशिष्ट्य के द्वारा विश्व पटल पर एक अलौकिक महापुरुष के रूप में प्रतिष्ठापित हुए। कार्तिक शुक्ला द्वितीया, वि.सं.२०७० से कार्तिक शुक्ला द्वितीया, वि.सं.२०७१, तदनुसार ५ नवम्बर २०१३ से २५ अक्टूबर २०१४ तक उनका जन्मशताब्दी वर्ष कृतज्ञ विश्व के लिए भावांजलि अर्पित करने का एक सुनहरा अवसर है, जो अब निकट से निकटतर बनता जा रहा है।

परमपूज्य युगप्रधान आचार्य महाप्रज्ञ ने अपने अन्तिम वर्षों में अपने गुरु से संबद्ध इस ऐतिहासिक अवसर के लिए अनेक कल्पनाएं संजोई, महत्त्वपूर्ण पथदर्शन प्रदान किया। परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण ने अपने गुरु द्वारा प्रारंभ किए गए कार्य को आगे बढ़ाते हुए इस विशाल एवं भव्य आयोजन हेतु अनेक महत्त्वपूर्ण निर्णय किए हैं। इन योजनाओं के निर्माण एवं क्रियान्विति हेतु 'व्यक्तित्व निर्माण प्रकल्प परिषद' नामक साधु-साध्वियों की एक समिति गठित की गई। पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में प्रस्तुत परिषद और जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के पदाधिकारियों की विभिन्न चिंतन संगोष्ठियां समायोजित हुईं। पूज्यवर द्वारा किए गए कतिपय निर्णयों को विज्ञप्ति में क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है।

• आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी समारोह सन २०१३-१४ के दौरान चार चरणों में समायोजित होगा। वे चार चरण इस प्रकार हैं--

चरण	दिनांक	तिथि
प्रथम	५ नवम्बर २०१३	कार्तिक शुक्ला द्वितीया, वि.सं.२०७०
द्वितीय	५ फरवरी २०१४	माघ शुक्ला षष्ठी, वि.सं.२०७०
तृतीय	७ सितम्बर २०१४	भाद्रपद शुक्ला नवमी, वि.सं.२०७१
चतुर्थ	२५ अक्टूबर २०१४	कार्तिक शुक्ला द्वितीया, वि.सं.२०७१

• गुरुकुलवास में प्रत्येक चरण का कार्यक्रम सप्तदिवसीय रहे--

प्रथम चरण	५ नवम्बर से ११ नवम्बर २०१३	लाडनूं
द्वितीय चरण	३० जनवरी से ५ फरवरी २०१४	गंगाशहर

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

तृतीय चरण	७ सितम्बर से १३ सितम्बर २०१४	दिल्ली
चतुर्थ चरण	१६ अक्टूबर से २५ अक्टूबर २०१४	दिल्ली

संबोधन-अलंकरण

२५ जुलाई। परम पावन आचार्यप्रवर ने श्राविका श्रीमती मैनादेवी सेठिया (सादुलपुर) को 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' संबोधन से संबोधित किया है।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

५१००/- स्व. श्री धर्मचन्द्रजी पुगलिया (सुपुत्र-स्व.नारायणचन्दजी-रम्भादेवी पुगलिया, श्रीडूंगरगढ-कोलकाता) की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती किरणदेवी, सुपुत्र एवं पुत्रवधू भीखमचन्द-सुशीला पुगलिया द्वारा प्रदत्त।

३१००/- श्री घेवरचन्दजी रायसोनी (आउवा-बेंगलुरु) की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती उमादेवी, सुपुत्र दिलीपकुमार, राकेशकुमार, भरतकुमार एवं सुपौत्र सक्षम, स्पर्श रायसोनी द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती सुशीलादेवी सिंघवी (धर्मपत्नी-श्रद्धानिष्ठ श्रावक श्री गुलाबचन्दजी सिंघवी, मेड़तासिटी-मुम्बई) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र राजेन्द्र, कपूरचन्द, रमेश, दिनेश सिंघवी द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्री जतनमल कंचनदेवी बैद (राजलदेसर-जयपुर) के दाम्पत्य जीवन की ५०वीं वर्षगांठ (स्वर्ण जयंती) के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र व पूत्रवधू संजयकुमार-सुमन, रूपेशकुमार-गीतिका, सुपौत्र श्रेयांस, संभव, सुपौत्री आस्था, सौम्या, रिया, निष्ठा बैद द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्री मानमल-कलादेवी बच्छावत (बीदासर-कोलकाता) के दाम्पत्य जीवन की ५०वीं वर्षगांठ (स्वर्ण जयंती) के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र व पूत्रवधू अजित-स्नेहलता, सुपौत्री राजश्री, भव्या बच्छावत द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्री चंपालाल-जीवनीदेवी घोड़ावत (सादुलपुर-चूरू) के आजीवन शीलव्रत स्वीकार करने के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र व पूत्रवधू मनोज-अनुपमा, शिव-ममता, संदीप, सुपौत्र ऋषभ, उत्तम एवं सुपौत्री अंकिता, वर्षा, चांदनी घोड़ावत द्वारा प्रदत्त।

- विज्ञप्ति के जिन सदस्यों का शुल्क समाप्त हो चुका है, वे वार्षिक शुल्क २५०/- अथवा आजीवन शुल्क २१००/- आदर्श साहित्य संघ के दिल्ली कार्यालय अथवा शिविर कार्यालय को भिजवाएं। शुल्क अपने यहां आदर्श साहित्य संघ के एकाउण्ट नं. ०१३३०००१००३६८३५६ (पंजाब नेशनल बैंक) में भी जमा करा सकते हैं।

पत्र व्यवहार के लिए हमारा पता–

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति,
पो. जसोल-३४४०२४ जि. बाड़मेर (राजस्थान) फोन : ६६८००५५३८१, ६३५२४०४६४१
दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

प्रकाशन दिनांक : २८-७-२०१२

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**